12

अबीगैल

समझदार औरत

(25:14-42)

''औरत के एक बाल से घण्टी की रस्सी से अधिक खींचने की शज़्ति होती है'' एक पुरानी जर्मन कहावत है जो समाज पर स्त्री के प्रभाव के बारे में बहुत कुछ कहती है। सुन्दर अबीगैल इस कहावत को चरितार्थ करती है। बाइबल से हमें उसके माता-पिता या उसके वंश का कुछ पता नहीं चलता। उसका पालन-पोषण परमेश्वर के भय में किया गया था, ज़्योंकि वह यहोवा को जानती थी और उसका भय मानती थी।

1 शमूएल से उसके बारे में हमें इन बातों का पता चलता है: उसके नाम का अर्थ ''आनन्द का कारण'' था और उसके बाहरी रूप तथा दूसरों पर प्रभाव से इसका पता चलता था। उसका यह विवाह उसकी अपनी पसन्द से नहीं हुआ होगा। ज़्योंकि प्राचीन रीति-रिवाज़ों के अनुसार लड़की अपने पिता द्वारा चुने गए लड़के से विवाह करने को विवश होती थी। वह ''बुद्धिमान और रूपवती थी'' (25:3)। आज की बहुत सी स्त्रियों में जो बाहरी सुन्दरता पर ध्यान देती हैं और दिमाग की अनदेखी कर देती हैं, इन दोनों गुणों को साथ-साथ रखने पर ध्यान नहीं दिया जाता! बाइबल में केवल तीन दूसरी स्त्रियों (सारा, वशती, और बतशेबा) को ''सुन्दर'' कहा गया है। अबीगैल में हम देखते हैं कि उसकी शारीरिक सुन्दरता उसकी भलाई तथा अन्दरूनी अनुग्रह से बढ़ती थी (तु. भजन संहिता 45:13)। वह दाऊद की आठ पत्नियों में से एक बन गई; उसकी दूसरी पत्नियां थीं, मीकल (1 शमूएल 18:27), बतशेबा (2 शमूएल 12:24), अहीनोअम, माका, हग्गीत, अबीतल और एग्ला (2 शमूएल 3:2-5)। इन आठों में सज़्भवतया अबीगैल ही दाऊद के जीवन में सबसे अधिक भलाई का स्रोत थी।

पहला शमूएल 25:3, 14-42 हमारा परिचय एक अद्‌भुत महिला से कराता है। अबीगैल की कहानी ने दाऊद के साथ-साथ आज उसकी कहानी पढ़ने वाले सब पाठकों पर एक चिरस्थाई प्रभाव छोड़ा है। इस अद्‌भुत महिला पर ध्यान देने के बाद, आपको उसके लिए दाऊद की प्रशंसा तथा लगाव का कारण आसानी से समझ आ सकता है।

उसका इतिहास

अबीगैल की कहानी ऐसे समय में मिलती है जब अकृतघ्नता, अज़्खड़पन, ढिठाई,

घृणा, कड़वाहट, क्रोध तथा मूर्खतापूर्ण बातों से भावनाएं आहत होती हैं। इस बुरे समय में, अबीगैल की उपस्थिति एक ऐसा चमकदार बिन्दु है जो बुझ नहीं सकता।

दाऊद की टुकड़ियों ने नाबाल के झुंडों की रक्षा की थी। यह बिना कोई वेतन लिए उदारता से की गई सेवा थी। बेवकूफ नाबाल ने दाऊद की दयालुता का बदला मूर्खता और कठोरता से दिया (25:3)। लोगों में दाऊद की बदनामी का बदला नाबाल के घर के खून से चुकाया जाना था (25:22)। इससे एक खूनी और कड़वाहट भरे युद्ध की तैयारी हो गई थी।

जब भावनाएं बुरी तरह से आहत थीं, तो दाऊद को राहत देने के लिए अबीगैल ने प्रवेश किया (25:18 से)। वह दाऊद के लिए उदार भेंट लेकर आई तथा विनम्रता से क्षमा मांगी। उसने दाऊद को बदला लेने के लिए अपनी इच्छा बदलने के लिए विवश किया। दाऊद को मना लेने के बाद वह नाबाल के पास घर लौट गई, ज़्योंकि वह एक वफ़ादार पत्नी तथा निकज़्मे साथी की रक्षा करने वाली थी। उसने उस आदमी के साथ रहना नहीं छोड़ा जिसके साथ रहने की उसने शपथ खा ली थी।

नाबाल की मौत के बाद दाऊद ने अबीगैल के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा (25:39)। दाऊद की पत्नी तथा दाऊद के पुत्र की माता के रूप में अबीगैल ने अच्छी शुरुआत की (2 शमूएल 3:3; 1 इतिहास 3:1)। अबीगैल बाद में जीवन भर दाऊद के साथ ही रही। यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि दाऊद अच्छी सलाह के लिए समझदार पत्नी की तलाश में था और अबीगैल की नेक सलाह ने उसे एक अच्छी पत्नी साबित किया (25:33क)।

उसके गुण

अबीगैल के जीवन तथा स्वभाव के बारे में पाये जाने वाले गुण आज की महिलाओं के लिए आदर्श हो सकते हैं।

उसका आदर होता था (25:17)। नौकरों को मालूम था कि अबीगैल जानती है कि दाऊद से नाबाल की गड़बड़ी की समस्या को कैसे सुलझाना है। नौकर उसके तर्क तथा निर्णय की कदर करते थे (25:35)।

वह क्रोध को शांत करने में सक्षम थी (25:33, 35)। पूरी सज़्भावना है कि उसने नाबाल के अज़्खड़पन के लिए पहली बार क्षमा नहीं मांगी होगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि उसने कई बार सुलह कराने वाले की भूमिका निभाई होगी। वह दाऊद के क्रोध को शांत करने के लिए युज़्ति तथा बुद्धि का इस्तेमाल करने में सक्षम थी।

परमेश्वर में उसका बड़ा विश्वास था (25:26से)। कहानी में उसे परमेश्वर से परिचित एक स्त्री के रूप में दिखाया गया है। अपने पज़्के भरोसे के कारण वह नाबाल के साथ रहकर कठिन दौर से गुज़रने के बावजूद भी एक भली स्त्री बनी रही। दाऊद के साथ बात करते समय उसकी बातों से पता चलता है कि उसका विश्वास जीवित तथा व्यावहारिक था। 25:26, 27 में उसने ऐसी अभिव्यज़्तियों का इस्तेमाल किया जिनसे लगा कि वह भेंट उसकी ओर से नहीं बल्कि उसकी प्रार्थना के जवाब में परमेश्वर की ओर से थी। उसने भोजन

उपलब्ध कराने में भी परमेश्वर का उपकार देखा।

वह दृढ़ तथा निर्णय लेने वाली थी (25:18से)। परिस्थिति बड़ी नाज़ुक थी और उसने फुर्ती से काम किया। वह जानती थी कि क्या करना है और उसने अपना पूरा ज़ोर लगा दिया। दाऊद के पास जाकर, उसने उस समय की परम्परा के अनुसार किया, परन्तु उसने यह सुनिश्चित किया कि कार्य सही ढंग से हो (25:24)। वह दाऊद को यह बताने से डरी नहीं कि बदला लेने की उसकी प्यास गलत है। बाद में नाबाल से बात करते हुए उसने उसकी गलती की मूर्खता भी उसके मुंह पर बता दी (25:37)।

उसने अपने घराने की सुरक्षा के लिए उसकी देखभाल की (25:31)। अबीगैल की सबसे बड़ी प्राथमिकता अपने घर की सुरक्षा थी। अपने घर को सुरक्षित करने के लिए उसे जो आवश्यक लगा, उसने किया।

वह दीन तथा विनम्र थी (25:41, 44)। दाऊद के पास पहुंचकर वह दृढ़ तो थी परन्तु विनम्रता के साथ। चिढ़े हुए दाऊद के साथ उसकी पूरी बातचीत विनम्रतापूर्वक थी। इस दृश्य में हमें 1 पतरस 3:2-4 का सुन्दर उदाहरण दिया गया है:

> तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल चलन को देखकर बिना वचन के अपनी पत्नी के चाल चलन के द्वारा खिंच जाएं। और तुम्हारा सिंगार दिखावटी न हो, अर्थात बाल गूंथना, और सोने के गहने या भांति भांति के कपड़े पहनना। वरन तुम्हारा छिपा हुआ गुप्त मनुष्यत्व नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है।

वह उन सब के लिए जिनके सम्पर्क में आती थी, एक आशीष थी (25:32)। दाऊद के साथ उसकी पहली मुलाकात से लगता है कि उसके जीवन को नया अर्थ तथा उद्देश्य मिल गया था। अबीगैल से मिलने तथा उसे जानने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले किसी भी व्यक्ति को दाऊद की भावनाओं की अच्छी तरह समझ होगी।

वह एक अनुग्रहकारी तथा अतिथि सत्कार करने वाली मेहमान नवाज थी (25:4)। भेड़ों की ऊन कतरने के पर्वों को दावतों तथा आनन्द बनाने के पर्व के रूप में मनाया जाता था। ऐसे त्यौहारों के लिए तैयारियां करना कठिन और थका देने वाला था। परन्तु अबीगैल ने इस काम को स्वीकार किया और अच्छी तरह पूरा किया।

ये अद्भुत गुण हैं जो इस सुन्दर तथा समझदार स्त्री को माओन वासी उस आदमी से अलग करते हैं। वह सचमुच ''अति शोभायमान'' थी (भजन संहिता 45:13)।

उसकी चुनौतियां

अपनी मिसाल में, अबीगैल आधुनिक स्त्रियों को तीन चुनौतियां देती हुई आधुनिक मसीही स्त्रियों को उन्हें स्वीकार करने का निमन्त्रण देती है।

पहली, वह स्त्रियों को ऐसी महिला बनने की चुनौती देती है जिसके होने तथा उपस्थिति से सब लोगों को आशीष मिले। अबीगैल के नाम का अर्थ था ''आनन्द का कारण,'' और

दूसरों पर उसके प्रभाव के लिए यह उसकी सही व्याज़्या है। उसके नाम से संकेत मिलता है कि वह एक चमकदार, आनन्ददायक तथा मनोहर व्यज़्तित्व वाली स्त्री थी। जब वह कमरे में चलती थी तो कमरा महक उठता था! उसके चलने से सूर्य में चमक आ जाती, पक्षी गाते थे और लोगों के चेहरे पर मुस्कान आ जाती थी! उसकी उपस्थिति एक आशीष थी ज़्योंकि आनन्द उसका साथी था (25:32)।

वह क्रोधित तथा चिढ़े हुए आदमी को शांत करने की योग्यता के साथ एक आशीष थी। मधुर शज़्दों और शांत चित से उसने दाऊद के क्रोध को ठण्डा किया। उसमें ''तूफ़ानों को शांत करने'' की क्षमता थी (25:33; जकर्याह 8:19; 1 पतरस 3:11)। नीतिवचन कहता है, ''बुरी युज़्ति करने वालों के मन में छल रहता है, परन्तु मेल की युज़्ति करने वालों को आनन्द होता है'' (12:20) और ''जैसे चांदी की टोकरियों में सोनहले सेब हों वैसे ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है'' (25:11)।

वह एक आशीष थी ज़्योंकि दूसरों की सहायता करके उसे बड़ा आनन्द मिलता था। उसने दाऊद को यह स्मरण रखने में सहायता की कि वह परमेश्वर का अभिषिज़्त है। उसने कहा, ''अपनी दासी का अपराध क्षमा कर; ज़्योंकि यहोवा निश्चय मेरे प्रभु का घर बसाएगा और स्थिर करेगा, इसलिए कि मेरा प्रभु यहोवा की ओर से लड़ता है, ...'' (25:28)। उसने दाऊद को यह याद रखने में भी सहायता की कि वह परमेश्वर की सज़्भाल तथा प्रेम करने वाली चीज़ है (25:30)। सज़्भवतया बाद के वर्षों में उसने दाऊद को धीरज तथा सहनशीलता सीखने में सहायता की। परन्तु उसने केवल दाऊद की ही नहीं बल्कि और कइयों की भी सहायता की। वह जहां भी होती वहां दूसरों को और अच्छी सेवा के लिए सहायता करने को तैयार रहती!

दूसरा, वह स्त्रियों को अपने जीवनों में कमर कस कर विश्वास रखने की चुनौती देती है! अबीगैल की सुन्दरता का रहस्य उसका विश्वास था! उसकी दीनता तथा उदारता, दूसरों की चिंता तथा सहानुभूति, अनुग्रह तथा मनोहरता परमेश्वर में उसके विश्वास के कारण ही आई थी (25:26-31)।

यदि स्त्रियां अबीगैल के विश्वास को अपना लें, तो वे बहुत सी आशिषों का कारण होंगी। स्त्रियो अपने जीवन को विश्वास से जोड़ लो जैसे अबीगैल ने जोड़ लिया था!

तीसरा, वह स्त्रियों को परमेश्वर में आनन्द पाने की चुनौती भी देती है जिससे वे जीवन की कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करने में कामयाब हों! अबीगैल का घरेलू तथा वैवाहिक जीवन बद से भी बदतर था! कोई आनन्द या शांति नहीं थी, ''अशिष्ट पति'' से केवल निराशा ही मिलती थी। उसे एक शराबी के साथ रहना पड़ता था ज़्योंकि उसका पति नास्तिक और संवेदनाहीन व्यज़्ति था। वह उसकी गलतियों की बात करके उसके अज़्खड़पन के लिए क्षमा मांग रही थी। परन्तु उसकी अपनी कोई गलती नहीं थी!

कुछ मसीही स्त्रियों के सामने यही चुनौती होती है। उन्हें नाबाल जैसे दुष्ट पति के साथ हर रोज़ रहना पड़ता है। वे बहादुर हैं और बुड़बुड़ नहीं करतीं। कठोर तथा अज़्खड़ जीवन-साथी बनने के बजाय वे परमेश्वर की वफ़ादार रहती हैं। उनके लिए यह चुनौती आसान

नहीं है। स्त्रियो, यदि आप घर में ''नाबाल'' के साथ रहने के कारण कहीं हिज़्मत हारने की तो नहीं सोच रहीं, हिज़्मत न हारें! परमेश्वर का भय रखने वाली अबीगैल को याद रखें।

सारांश

अबीगैल रूपवती ही नहीं थी उसकी सुन्दरता तो उसके चरित्र तथा विश्वास के कारण थी। उसने बड़ी-बड़ी चुनौतियों का सामना बड़े धैर्य से किया; उसने क्रोध से भरे मन को शांत किया और क्रोधित शराबी को डांटा। वह वास्तव में एक दिलेर औरत थी! उसे सामर्थ का एक ही कारण था, परमेश्वर में उसका विश्वास!

स्त्रियो, अपने जीवनों में इन विचारों को सावधानीपूर्वक लागू करो। अपने प्रभाव को देखो और सुनिश्चित करो कि इसका इस्तेमाल शांति लाने, और दूसरों के लिए विश्वास के उद्देश्य में काम आए। अपने आप को ''अबीगैल'' मानकर इस संसार में ''आनन्द का कारण'' बन जाओ!